संपर्क :-

बोध यात्रा
माँ इंफ़्राटेक प्राइवेट लिमिटेड
C1/2780
पिताम्बरा हाउस
सुशांत लोक,
फेज - 01सेक्टर -43
ब्लॉक -C
पारस हॉस्पिटल के पास
गुरुग्राम -(122002)

बोध यात्रा
नवरचना
राज ऋषि नगर
गिलट बाजार
वाराणसी
उत्तर प्रदेश
(221002)

बोध यात्रा
ई ई,146
साल्टलेक
सेक्टर-02
कोलकाता- (700091)

बोध यात्रा
101, पत्रकारपुरम,
मनोरमा रेसीडेंसी के पास
नावाडीह
धनबाद (826001)

+91 76544 35782
+918709090087

बोध यात्रा

(जीवन मूल्य, संस्कार और व्यावहारिक ज्ञान को समर्पित राष्ट्र निर्माण का अभियान)

अधिष्ठापना

सत्यं शिवं सुंदरम की

बोध यात्रा एक परिकल्पना है। समाज में **सत्यं शिवं सुंदरम** की अधिष्ठापना का एक उपक्रम। मौजूदा समय में यह परमावश्यक है। गुरुपूर्णिमा के दिन गाजियाबाद के एक स्कूल में दो छात्र अपने प्रिंसिपल की हत्या केवल इस आवेग में कर देता हैं, चूंकि प्राचार्य ने उन्हें बाल कटवाकर आने के लिए फटकारा था। क्यों आवेशित है बाल मन ? क्यों गेंद खेलने की उम्र में उसके हाथों में चाकू आ गया ? कहां गुम हो गई बाल सुलभ प्रवृति? इन सब पर विमर्श के लिए सृजित हुई है यह बोध यात्रा। बाल मन में भरपूर कोमलता, मृदुलता, सहकार, दयालुता, श्रद्धा, समर्पण, स्नेह पले-बढ़े ऐसी ही चिंताओं को साथ लेकर चलेगी यह यात्रा। जिस बच्चे ने अपने प्रिंसिपल को मार दिया, वह आपके घर का भी हो सकता है, आपके स्कूल का भी और आपके समाज का भी। अभी नहीं तो कल होगा। इस विकट कलिकाल में कोई इससे अछूता नहीं रहेगा।हमारी कोशिश है निहंगपन में संस्कार के आगमन की। अनमनेपन में राग के अंकुरण की। दुनिया में एक होड़ मची है कृत्रिम बुद्धिमत्ता यानी एआइ की। मानव की बुद्धि क्षमता से ज्यादा तेज बनाने की कोशिश जारी है। द लैसेंट पब्लिक हेल्थ में प्रकाशित हाल की रिपोर्ट में यह दर्ज है कि ग्लोबल बर्डन आफ डिजीज इंजरी एंड रिस्क फैक्टर्स स्टडी (जीबीडी) के अध्ययन में भारत सहित दुनिया भर के देशों में प्रति 43 सेकंड में एक आदमी अपनी जिंदगी समाप्त कर लेता है। कब थमेगी यह दर? आंख मूंद कर सोचिए कि क्या आपके आसपास पहले की तुलना में आत्महत्या की प्रवृति बढ़ नहीं गई है? क्या आप असमय जवान हो रहे बचपन की करतूतों से अनभिज्ञ हैं? शायद नहीं। कहते हैं कि भीतर की शांति बाहर के तूफान को थाम लेती है। पर हमारा अंतस क्या सचमुच शांत है?जीवन के लिए रोटी जैसा अपरिहार्य बन चुके उपकरण मोबाइल ने दुनिया छोटी जरूर कर दी पर हमारे बच्चों की दुनिया ही गोल कर दी। उनकी कल्पना शक्ति, उनके मनोभाव, उनकी बाल सुलभ प्रवृति सबको छीज रहा है यह मोबाइल। हम इससे दूर भी नहीं हो सकते।

ऐसे में रास्ता क्या है?

रास्ता है मनुष्यता की नई पौध को संस्कारों से सिंचित किए रखने का। उनके बाल मन में वैसे बीज रोपने का जो अहिंसा, सत्य, निष्ठा, अपरिग्रह, आस्तेय का संदेश दे। उनके जीवन पथ को रोशन करे। उन्हें बताए कि दुनिया में श्रेष्ठ होने के रास्ते क्या हैं। हमें पाठ्य पुस्तकों से इतर रचना के संसार में, कल्पना के समुद्र में, सुंदर भावों के आकाश में विचरण का मार्ग ढूंढ़ना होगा। हमारे बच्चे संस्कारित रहेंगे तभी हमारा घर खुशहाल होगा। घर-परिवार ही समाज की पहली इकाई है और ऐसे ही समाज दर समाज जुटकर देश बनता है। यह देश बनाने का मिशन है, जिसमें आपका सहयोग अनिवार्य है। जय जगत सेवा संस्थान, बोध यात्रा प्रकाशन, सर्वसेवा संघ, वाराणसी के सम्मिलित प्रयास से हम इस यात्रा की शुरुआत करना चाहता हैं।

इस यात्रा का चरण इस रूप में होगा:-

1: हम देश के स्कूलों को इस बोध यात्रा में सहभागी बनाएंगे।
2: उनके बच्चों के बीच सकारात्मक, संस्कारित करने योग्य, कथ्य, तथ्य का संचार करेंगे।
3: उनके फुर्सत के पल को चुराएंगे।
4 : उन्हें रचनात्मक बनाएंगे।
5: उन्हें कहानियां पढ़ाएंगे, सुनाएंगे जिनसे वे जीवन के लिए आनंद ही नहीं, उच्च आदर्शों को भी ग्रहण कर सकेंगे।
6: उनका परिचय अपनी संस्कृति, अपने साहित्य, अपनी प्रकृति, अपने पर्यावरण, अपने राज्य, अपने देश और अपने समाज के गौरव बोध से कराएंगे।
7: उनके मन में रचनात्मकता के बीच बोएंगे।
8 : ज्ञानात्मक संवेदन के अहोभाव से उन्हें भरने की चेष्टा करेंगे।
9: आत्म ज्ञान के उनके पट से रचना का संसार और संस्कार दोनों सृजित करेंगे।
10: उनमें सकारात्मक, भावात्मक, संवेदनात्मक, रचनात्मक, आध्यात्मक, ज्ञानात्मक, सृजनात्मक, अहिंसात्मक वृतियों का बोध व्याप्त कराएंगे।
11: कोरे कैनवास पर उनसे ही जीवन के आनंद के दृश्य उकेरवाएंगे।
12: उनसे अभिनय कराएंगे जिसमें होगा परदुखकातरता का अनंत भाव, साहचर्य की ऊष्मा और संस्कारों का तेज।
13: उनसे गीत रचाएंगे। ताकि बैलों के गले में लगे घुंघरू से जीवन का राग वह भी सुन सकें, सृज सकें।
14: उनकी रचनाओं के प्रकाशन का आश्रय उपलब्ध कराएंगे ताकि उनके भीतर का कवि, कथाकार, संगीतकार, लेखकीय प्रतिभा का ठीक से प्रस्फुटन हो।
15: किताबों की दुनिया से उनको नाभिनालबद्ध करेंगे ताकि उनके जीवन के एकांत में किताब जैसा दोस्त सदा बना रहे।यह जरूरी है।

आज जब मूल्य विखंडन और सांस्कृतिक विस्मृति का दौर चल रहा है, तब बालक में देवभावों का पोषण केवल एक पारिवारिक जिम्मेदारी नहीं है अपितु सांस्कृतिक राष्ट्र निर्माण का भाग बन चुका है। देवत्व का अर्थ केवल किसी विशेष धार्मिक आस्था से नहीं जुड़ा है। देव शब्द का मूल भाव है – जो देने वाला हो, जो प्रकाश फैलाता हो, जो विवेक, करुणा और सेवा का प्रतीक हो। जब हम अपने बालक के मन में सत्य, दया, क्षमा, शील, सेवा और संयम जैसे भावों का बीजारोपण करते हैं तो वास्तव में हम उसमें देवत्व का सिंचन करते हैं। हमें स्मरण रखना होगा कि यदि बालक में दैवीय गुणों की स्थापना होती है तो एक दिन समाज में राम, युधिष्ठिर, बुद्ध, शंकर और विवेकानंद फिर से जन्म लेंगे। नए स्वरूप में, नवीन युग की मांगों के अनुसार। यही हमारी सबसे बड़ी पूंजी और यही हमारे भविष्य की आशा है। आइए ! इस यात्रा के अग्रसर के रूप में हमें आपकी जरूरत है।